बी.एस.ओ.ई.-142 : भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH
पाठ्यक्रम कोड: **BSOE-142**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.ई. -142 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंक: **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. भारतीय समाज को समझने के संदर्भ में डी.पी. मुखर्जी तथा ए.आर. देसाई के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों की तुलना कीजिए। 20

2. बेनॉय कुमार सरकार के योगदान के संदर्भ में भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन की सामाजिक पूर्ववर्तियों (Social Antecedents) की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का ळें

3. एम.एन. श्रीनिवास द्वारा प्रतिपादित संस्कृतिकरण (Sanskritization) तथा पाश्चात्यीकरण (Westernization) की अवधारणाओं के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए। 10

4. भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं के विकास में नारीवादी समाजशास्त्रियों के योगदान की चर्चा कीजिए। 10

5. भारत में राष्ट्रवाद की समझ के संदर्भ में ए.आर. देसाई के दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. भारतीय समाजशास्त्र में इंडोलॉजिकल (Indological) दृष्टिकोण क्या है? 06

7. समाजशास्त्र के बॉम्बे स्कूल (Bombay School of Sociology) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 06

8. भारत की जनजातियों के संबंध में जी.एस. घुर्ये के क्या विचार थे? 06

9. 'भारतीय समाजशास्त्र का समाजशास्त्र' से रामकृष्ण मुखर्जी का क्या आशय था? इसकी प्रमुख विशेषताओं की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए। 06

10. इरावती कर्वे के दृष्टिकोण के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि जाति किस प्रकार नातेदारी (Kinship) संगठन को प्रभावित करती है। 06

1. भारतीय समाज को समझने के संदर्भ में डी.पी. मुखर्जी तथा ए.आर. देसाई के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों की तुलना कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन में धूर्जटी प्रसाद मुखर्जी (डी. पी. मुखर्जी) तथा अक्षय रमनलाल देसाई (ए. आर. देसाई) ऐसे विद्वान थे जिन्होंने भारतीय समाज को इतिहास और सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से समझने का प्रयास किया। दोनों पर मार्क्सवादी विचार और द्वंद्वात्मक विश्लेषण का प्रभाव था, पर उनकी प्रमुख रुचियाँ तथा व्याख्या के आधार एक समान नहीं थे। डी. पी. मुखर्जी भारतीय परंपराओं के भीतर चलने वाली परिवर्तनशील प्रक्रियाओं और संस्कृति के सामाजिक अर्थ पर बल देते हैं, जबकि ए. आर. देसाई वर्ग-संबंधों, उत्पादन-व्यवस्था, औपनिवेशिक शोषण तथा राज्य की भूमिका को सामाजिक परिवर्तन की कुंजी मानते हैं। इस अंतर को समझने से भारतीय समाजशास्त्र की ऐतिहासिक और आलोचनात्मक परंपरा अधिक स्पष्ट होती है।

डी. पी. मुखर्जी का परंपरा और परिवर्तन का दृष्टिकोण

मुखर्जी इतिहास, अर्थशास्त्र, साहित्य, संगीत और दर्शन की व्यापक पृष्ठभूमि से समाजशास्त्र में आए। उनके अनुसार भारतीय समाज को समझने के लिए भारतीय परंपराओं की आंतरिक संरचना और उनके जीवित सामाजिक संदर्भ का अध्ययन आवश्यक है। वे परंपरा को जड़ या अपरिवर्तनशील वस्तु नहीं मानते थे; उनके लिए परंपरा वर्तमान परिस्थितियों के संपर्क में आकर नए अर्थ ग्रहण करती है। इसलिए परंपरा और आधुनिकता को सर्वदा विरोधी शक्तियाँ मानना गलत है। आधुनिक शिक्षा, उद्योग तथा राजनीतिक संस्थाएँ जब भारतीय जीवन में प्रवेश करती हैं, तब उनका स्थानीय रीति-रिवाजों, सामूहिक संबंधों और ऐतिहासिक स्मृतियों से संवाद होता है। उसी अंत:क्रिया से परिवर्तन का विशिष्ट भारतीय रूप बनता है।

मुखर्जी भारतीय समाज में समूह-जीवन, सामाजिक संबंध और संस्कृति की प्रधानता पर बल देते थे। किसी व्यक्ति के जीवन को समझने के लिए उसके परिवार, जाति, भाषा और समुदाय में